International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666 : Vol.2, Issue-4(4), October-December, 2015
Impact Factor : 1.855

स्वतंत्रता संग्राम को हिन्दी पत्रकारिता का योगदान

Dr. Balaji Naik.L
Department of Hindi
Bangalore University
Bangalore-560056
Mob:09845266163.
Email: balajinaik78@gmail.com

भूमिका

देश-विदेशों की सभी प्रमुख तथा सामान्य खबरों को समस्त जनता तक पहँचाने का कार्य पत्रिकाएँ करती है । आधुनिक युग में पत्रिकाएँ मानव जीवन की अटूट कडी बन गई है। दुनिया भर की घटनों का चित्रण तथा सभी प्रकार की जानकारियों को लोगों तक पहूँचाने में पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। स्वतंत्रता आंधोलन के समय में समस्त भारतवासीयों को एकता के सूत्र में बाँध कर अंग्रेज़ों से देश को मुक्ति दिलाने में हिन्दी साहित्यकारों तथा हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के साथ-साथ इस देश की सामाजिक संघटना में विघटन और परिवर्तन लक्षित होने लगा । अनेक जातियों-उपजातियों में विभक्त इस देश में पारस्परिक एकता का सर्वदा अभाव रहा है । ऐसे संदर्भ में कुछ ऐसी नयी समस्याएँ पैदा हुई, जिनसे ज़ूझने के लिए नये दृष्टिकोण की आवश्यकता पडी।

भारतीय पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है । दोनों का विकास एक दूसरे के पूरक रहा है । प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (सन १९५७) से पूर्व कुछ पत्रों ने आन्दोलन को खूब भड़काया और इसका समर्थन किया । परन्तु गोरी सरकार ने सभी को कुचल दिया, चूँकि सरकार उनसे आतंकित थी । प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की सफलता के कारण राष्ट्रीय उत्साह कुछ समय के लिए ठण्डा पड़ गया था और भारतीय अवसाद और उदासी से दब गये थे।

प्रस्तुत लेख में भारत के स्वतंत्रता आंधोलन और उससे सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं में देश के महान राष्ट्र-भक्तों के साथ-साथ हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला जा रहा है।

पूर्व भारतेन्दु युग

बाबू भारतेन्दु युग से पूर्व में कुछ ही प्रमुख पत्रिकाएँ लोगों के सामने आयी । उन पत्रिकाओं में कुछ मासिक, कुछ साप्ताहिक और कुछ ही कुछ दैनिक रही है । प्रजाहित, ज्ञानप्रकाश, भारतखण्ड मित्र, मंगल समाचार, जगत समाचार आदि पत्र-पत्रिकाएँ स्वतंत्रता पूर्व की आज़ादी की लडाई में भी सहयोग दे पायी।

साहित्य मनुष्य के बृहत्तर सुख-दु:ख के साथ पहली बार जुडा । आधुनिक जीवन-चेतना की चिंगारियाँ पत्रकारिता तथा गद्य-साहित्य में दिखायी पडी । यह प्रक्रिया भारतेन्दु के समय में हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने सिविल सर्वेयर को अंग्रेजी शिक्षा देने के लिए कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना सन १८०१ में की । इस कालेज के अध्यापकों से देशभाषा में पाठ्य पुस्तकें ,कोश और व्याकरण तैयार करने का काम आरंभ हुआ ।

भारतवर्ष में मुद्रणयंत्र स्थापित करने का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है । सन १५५० में उन्होंने दो मुद्रणयंत्र को मंगवा कर धार्मिक पुस्तकें छापने का कार्य आरंभ किया । सन १६७४ में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बंबई में मुद्रणकार्य आरंभ किया गया । १८ वी शताब्दी में मद्रास , कलकत्ता, हुगली, बंबई आदि स्थानों में छापखाने स्थापित हुए । अंग्रेजों और मिशनरियों ने समाचारपत्र निकाले, किन्तु अपने देश के संदर्भ में पत्र निकालने का श्रेय राजा राममोहन राय को जाता है । सन १८२१ में उनके ही सहयोग से **संवद -कौमुदी** नामक साप्ताहिक बंगला पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ । इसमें सामाजिक समस्याओं के संबन्ध में लेख रहते थे ।

सीरामपुर मिशन के तत्वावधान में दो पत्र प्रकाशित हुए - समाचर-दर्पण और दिग्दर्शन। इसके बाद बंबई से गुजराती प्रेस के तत्वावधान में सन १८२२ में बाम्बे समाचार निकलना आरंभ हुआ । दैनिक पत्र के रूप में यह अब भी निकल रहा है । द्वारिकानाथ टैगोर , प्रसन्न कुमार टैगोर तथा राजा रममोहन राय जैसे प्रगतीशील व्यक्तियों ने सन १८३० में **बंगदूत** नामक पत्र की नींव डाली और सन १८३० तक कलकत्ता से तीन बंगला दैनिक, एक त्रैसाप्ताहिक, दो अर्ध साप्ताहिक, सात साप्ताहिक और एक मासिक प्रकाशित हो रहे थे ।

हिन्दी का पहला पत्र **उद्त मार्तण्ड** सन १८२६ में प्रकाशित हुआ । बाद में सन १८३४ को कलकत्ता से प्रजामित्र का प्रकाशन होने लगा । हिन्दी का दैनिक पत्र समाचार सुधावर्षण (सन१८५४) श्याम सुन्दर सेन के संपादकत्व में कलकत्ता से ही निकला । उन्नीसवी शताब्दी

के उत्तरार्ध में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन और भी अधिक संख्या में होने लगा । इससे नये विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा हुई । इनसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्रीयता के प्रचार और प्रसार में भी पर्याप्त सहयोग मिला ।

पत्रिका की स्वतंत्रता को ले कर प्रारंभ से ही अंग्रेज़ों और भारतवासियों में टकाराहट रही । इस संघर्ष में भी राजा राममोहन राय ने पहल की । एडम के समय में पत्रिका की स्वतंत्रता पर जो आक्रमण हुआ, उसके विरोध में उन्होंने अपने अन्य राष्ट्रीयवादी मित्रों के साथ कलकत्ता उच्च न्यायालय में आवेदन किया । कुछ लोगों के अनुसार संवैधानिक ढंग से राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के संघर्ष की यह शुरुआत थी । सन १७९९ में वेलेजली ने प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर दी, पर सन १८१८ में हेस्टिंग्ज ने प्रेस संबंधी प्रतिबन्धों को हटा दिया । सन १८२३ में प्रेस संबंधी अधिकारपत्र लेने का अधिनियम बना, जिसे सन १८३५ में मेटकाफ़ ने समाप्त कर दिया । सन १८५७ तक यही स्थिति बनी रही ।

इसमें संदेह नहीं कि समाचारपत्रों के माध्यम से विचारों का विनियम सहज हो पाया । भारतीय पुनर्जागरण के लिए प्रेस का वरदान अत्यधिक मूल्यवान सिद्ध हुआ ।

पुनर्जागरण/भारतेन्दु युग

पुनर्जागरण के नेताओं ने इस माध्यम का पूरा-पूरा उपयोग किया । मुद्रणालयों का प्रभाव साहित्य के लिए भी अत्यंत हितकर सिद्ध हुआ । भारतेन्दु के समय में शायद ही कोई ऐसा साहित्यकार रहा हो, जिसका सम्बन्ध किसी-न-किसी पत्र-पत्रिका से न रहा हो । पत्र-पत्रिकाओं में साहित्यिक रचनाओं के प्रकाशन के साथ ही समसाम्यिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला जाता रहा ।

नयी अर्थव्यवस्था और नवीन शिक्षा-पद्धति के कारण भारतीय जनता में एक चेतना उत्पन्न हुई जिसके आधार पर लोग अपनी कठिनाईयों को समझने और उनको दूर करने की कोशिश करने लगे । इसके लिए प्रेस से बेहतर और कोई साधन नहीं हो सकता था । इस शिक्षा पद्धति के कारण ही राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ । कांग्रेस की स्थापन के पूर्व भारतेन्दु की रचनाओं में देशकाल की अनेक समस्याएँ मुखरित हुई थी ।

ये पत्र-पत्रिकाएँ एक ओर जनतांत्रिक भावनाओं का पोषण कर रही थी दूसरी ओर समाज की रूढियों पर पहार करती हुई राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही थीं ।

भारतेन्दु के उदय से पूर्व पत्र-पत्रिकाओं के विकास का प्रथम दौर पूरा हो चुका था । पत्र-पत्रिकाओं का संबंध सीधे जनजागरण से है । किसी प्रकार के अन्याय या पक्षपात का प्रतिकार करने के लिए जनता जब उठ खडी होती है तो उसे अपनी आवाज़ बुलंद करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का सहरा लेना पडता है ।

हिन्दी पत्रकारिता का प्रथम उत्थान (सन १८२६-१८६७)

उन दिनों जनजागरण का केंद्र कलकत्ता नगर था । हिन्दी पत्रकरिता का आरंभ वहीं से हुआ । सन १८२६-१८६७ तक के कालखण्ड में प्रकाशित कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ निम्नलिखित है- १) उदंत मार्तंड, सन १८२६ में कलकत्ता से साप्ताहिक के रूप में २) बंगदूत, सन १८२९ में कलकत्ता से साप्ताहिक के रूप में ३) प्रजामित्र, सन १८३४ में कलकत्ता से साप्ताहिक के रूप में ४) बनारस अखबार, सन १८४५ में बनारस से साप्ताहिक के रूप में ५) समाचार-सुधावर्षण, सन १८५४ में कलकत्ता से दैनिक के रूप में ६) प्रजाहितैषी, सन १८५५ में आगरा से प्रकाशित हो पायी । इस कालखण्ड में पत्र-पत्रिकाएँ साहित्यिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक रूप से लोगों को जागरूक कर रही थी।

हिन्दी पत्रकारिता के प्रथम उत्थान में अधिकतर साप्ताहिक पत्रों का ही प्रकाशन हुआ। इस काल में पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य जनता में जागरण और सुधार की भावना उत्पन्न करना था । अन्याय का प्रतिकार भी अपनी सीमाओं में ये पत्र-पत्रिकाएँ करती थी।

हिन्दी पत्रकारिता का दूसरा उत्थान (१८६८-१८८५)

कविवचनसुधा के प्रकाशन से ले कर भारतेन्दु के अस्त होने तक की अवधि में जागरण और सुधार की भावना का प्रसार हुआ तथा अनेक वर्णों और धर्मों में विभाजित भारतवसियों ने अपने जाति-वर्ण के उत्थान के लिए जातीय और धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ किया । क्रमश: पत्र-पत्रिकाओं में गंभीर लेख लिखने लगे और कुछ शुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हुआ । इनके माध्यम से राष्ट्रीय चेतना भी अधिक प्रखर रूप से सामने आयी ।

सन १८६८-१८८५ तक के कालखण्ड में प्रकाशित कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ निम्नलिखित है- १) कविवचन सुधा, सन १८६८ में काशी से मासिक-पाक्षिक-साप्ताहिक के रूप में २) जगत-समाचार सन १८६९ में साप्ताहिक के रूप में, आगरा से ३) सन १८७४ में बनारस से बालाबोधिनी, मासिक के रूप में ४) हिन्दी-प्रदीप सन १८७७ में मासिक पत्रिका के रूप में

इलाहाबाद से ५) सन १८८१ में आनंदकादंबिनी, मिर्ज़ापुर से मासिक के रुप में ६) ब्राहमण, सन १८८३ में मासिक के रूप में कानपुर से तथा ७) सन १८८३ में इंदु, लाहौर से मासिक के रूप में प्रकाशित हुई । इस कालखण्ड में भी पत्र-पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक के रूप में प्रकाशित हो कर लोगों को जागरूक करने में सफ़ल हो पायी।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी और उनकी पत्रिकाओं का स्थान हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में अन्यतम है। पत्रकारों की राष्ट्रीयता समाज सुधार का एक अंग थी । इस समय के पत्र आरंभ में सामाजिक थे, आगे चलकर उनमें राष्ट्रीयता का स्वर खूब उभरा।

हिन्दी पत्रकारिता का तीसरा उत्थान (१८८६-१९००)

हिन्दी पत्रकारिता के तृतीय उत्थान में लगभग २०० से अधिक छोटी-बडी हिन्दी-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई जो लोगों को जागरूक करने तथा राष्ट्रीय चेतना को जगाने में सशक्त रही ।

इस कालखण्ड में प्रकाशित कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ निम्नलिखित है-

१) सन १८८७ में कलकत्ता से साप्ताहिक के रूप में आर्यावर्त ।
२) सन १८९४ में काशी से मासिक के रूप में साहित्य-सुधानिधी ।
३) सन १८९६ में काशी से त्रैमासिक के रूप में नागरीप्रचारिणी-पत्रिका ।
४) सन १८९७ में बांकीपुर से, समस्यापूर्ति ।
५) सन १९०० में सरस्वती, इलहाबाद से मासिक के रूप में प्रकाशित हो सकी ।

तीसरे उत्थान के इस समय तक भी राजनीतिक चेतना का केंद्र बंगाल ही था । हिन्दी-प्रदेश में भारतेन्दु के समय में जो राष्ट्रीय जागरण की लहर आयी थी, उसे **हिन्दी प्रदीप** ने पूरी शक्ति से जीवित रखा ।

आलोच्य/द्विवेदी युग

समाचारपत्र सामाजिक चेतना के वाहक होते हैं । हिन्दी पत्रकारिता का आरंभ हिन्दी प्रदेश से बाहर बंगाल के कलकत्ता महानगर में ही हुआ ।

सन १९०८ में तिलक जी ने अपने केसरी पत्र का हिन्दी-संस्करण " **हिन्दी-केसरी** " नाम से प्रकाशित करना आरंभ किया । साथ ही **"अभ्युदय"** का सन १९०७ में साप्ताहिक के रूप में प्रयाग से प्रकाशन हुआ, जिसके संपादक मदनमोहन मालवीय जी रहे । फिर प्रयाग से **"कर्मयोगी"** जो साप्ताहिक के रूप में और "मर्यादा", मासिक के रूप में सन १९०९ में

प्रकाशित हो पाये । पं.गणेशशंकर विद्यार्थि के संपादन में सन १९१३ में **"प्रताप"** साप्ताहिक के रूप में कानपुर से तथा **"प्रभा"** सन १९१३ में खंडवा से मासिक के रूप में प्रकाशित हुए ।

द्वितीय महायुद्ध के बाद भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी का प्रभाव बढा । इसका प्रभाव हिन्दी-पत्रकारिता पर भी पडा । पत्रिकाएँ भी अहिंसक आंदोलन का समर्थन करने लगीं। "चांद" का प्रकाशन आरंभ में प्रयाग से सन १९२० में साप्ताहिक पत्रिका के रूप में हुआ था । इसी तरह प्रेमचन्द द्वारा संपादित **"हंस"** पत्रिका का प्रकाशन बनारस से सन १९३० में हुआ जो तत्कालीन राजनैतिक तथा साहित्यिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण माध्यम बनने में समर्थ हुआ था । यह इस युग का एक जागरूक मासिक पत्र था ।

सन १९२३ में कलकत्ता से निकलनेवाला **"मतवाला"** हिन्दी का पहला हास्य-व्यंग्यप्रधान साप्ताहिक था । ब्रिटिश सरकार की नीतियों की इसमें तीखी आलोचना हुआ करती थी । सन १९२६ में कलकत्ता से **"सेनापति"** नामक साप्ताहिक निकला, जिसमें प्रकाशित रचनाएँ मूलत: राष्ट्रीयता से अनुप्राणित रहती थी ।

सन १९२० में वारणासी से निकलनेवाला **'आज'** कई दृष्टियों से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक था । स्वाधीनता-संग्राम के लिए जनमत तैयार करने की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभायी । इस युग के अन्य दैनिक-पत्रों में " **कलकत्ता-समाचार** और **स्वतंत्र** " का उल्लेख किया जा सकता है । "स्वतंत्र" सन १९३० तक जीवित रहा, जो गांधीजी के असहयोग-आंदोलन का समर्थन करने वाले पत्रों में यह अग्रणी था । विशाल भारत, अभ्युदय, भारत मित्र, आदि पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान स्वाधीनता-संग्राम में रहा है ।

उपसंहार

राष्ट्रीयता एक समग्र देश और उसके भीतर निवास करने वाली समस्त जातियों, भिन्न-भिन्न भू खंडों, संप्रदायों और रीति-रिवाज़ों के लोगों का संश्लिष्ट, सामूहिक रूप से उभरता है । वास्तव में पूरे भारतवर्ष की एकता के अर्थ में राष्ट्रीयता का विकास आधुनिक काल में हुआ । इसके पीछे पत्रकारिताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्यकारों के कारण से स्वतंत्रता आंदोलन के समय अपने-अपने में बंटे हुए लोगों को यह प्रतीत हुआ कि वे सब एक है, वे चाहे किसी जाति या धर्म के हों, अंग्रेज़ों के गुलाम हैं और फिर जब अंग्रेज़ों के शासन के विरुद्ध मुक्ति का अभियान आरंभ हुआ । इस से मुक्ति की चेतना किसी धर्म या प्रदेश में सीमित न रह कर पूरे देश में व्याप्त हुई ।

इस प्रकार पत्र-पत्रिकाओं के प्रभाव से स्वतंत्रता आंदोलन के युग में जो राष्ट्रीयता का स्वरूप उभरा और विकास हुआ उसके तीन आधार हैं- १) पूरे देश में अंग्रेज़ी शासन की स्थापना २) समग्र भारतीय प्रजा द्वारा अंग्रेज़ों के शासन से उत्पन्न यातना का समान अनुभव, तथा ३) स्वाधीनता-आंदोलन और उसका देशव्यापी प्रसार।

स्वाधीनता-आंदोलन के समय में इन पत्र-पत्रिकाओं ने पराधीन राष्ट्र की व्यथा, अंग्रेज़ों के शासन के अत्याचारों, उनसे प्रसूत जन-यातनाओं और जनता के मन में उठती हुई क्रोध तथा असंतोष की ललकारों का चित्रण तथा स्वाधीनता-सेनानीयों के अदम्य उत्साह, कारागार-यात्रा और उनकी बेबसीयों का चित्रण लोगों के समक्ष रखने का महान कार्य कर पाये हैं । इन्ही के कारण स्वतंत्रता संग्राम सफलता के पथ पर बढ सका।

संदर्भ सूची

१) डा. रमेशचन्द्र त्रिपाठी (२०१०).पत्रकारिता के सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली.
२) सनत कुमार. हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका.
३) डा. नगेन्द्र और डा. हरदयाल (२०१४). हिन्दी साहित्या का इतिहास
४) ओमप्रकाश सिन्घाल. प्रयोजनमूलक हिन्दी.
५) श्री बच्चन सिंह. हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप.
६) श्री राजकिशोर. पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य.